आज का पुरुषार्थ 22 June 2022

<u>Source</u>: BK Suraj bhai   **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज से अपने बुद्धि को शुद्ध स्वच्छ बनाने का पुरुषार्थ करे, ताकि परमपिता के द्वारा प्राप्त हुए ज्ञान रतन उसमें समा सके "*

स्वच्छ भारत अभियान बहुत सुन्दर है। बाहरी सफाई तो सभी कर रहे है और करेंगे भी। लेकिन अपने अन्तर्मन को अपनी **बुद्धि** को स्वच्छ करना यह भी इस अभियान के एक हिस्सा होना चाहिए।

जब मनुष्य का **अन्तर्चित्त शुद्ध** होगा, स्वच्छ होगा तो बाहरी स्वच्छता उसे बहुत आकर्षित करेगी। और वो कहीं भी गंदगी नहीं फैलायेगा। बल्कि गंदगी को साफ करेगा।

तो हम सभी वाह्य स्वच्छता के साथ आन्तरिक स्वच्छता पर भी ध्यान दे। हमने अपने मन में अपने **बुद्धि** में क्या क्या भर लिया है? क्यों हमारे चित्त को चैन नहीं मिल रहा है? क्या कारण है कि बहुत सारे लोग depression में जा रहे है?

इन सभी का कारण बुद्धि में भरी हुई गंदगी है। क्लीन इयोर mind clean clear ध्यान दे, यदि किसी के लिए ईर्ष्या द्वेष भर ली है, यदि किसी के लिए नफ़रत भरी हुई है, यदि किसी के लिए बदले की भावना भरी हुई है, यदि किसी के लिए वैर भाव भरा हुआ है ... तो हमारा मन भटकता ही रहेगा।

किसी के लिए अशुभ भावनायें व दुर्भावनायें भरी हुई है, किसी के धन पर नज़र है, किसी के सम्पत्ति पर नज़र है, किसी के हिस्से पर नज़र है तो हम सुखी नहीं हो सकते है !

याद रखें दुसरों के हिस्सा खाकर कभी कोई मनुष्य सुखी नहीं हुआ। कई लोग दुसरों की हिस्सा लेने के लिए कई बड़े बड़े अनर्थ कर बैठते है। और फिर उनके साथ भी वही होता है जो उन्होंने दूसरों के साथ किया।

कर्म की गति यही है। इसलिए हम अपने चित्त को साफ करे, ताकि हमारी बुद्धि में स्वयं भगवान का वास हो। ताकि हमारी बुद्धि में ज्ञान रतन समा सके।

हम रोज़ सुन रहे है, कि **पवित्र बुद्धि** में ही यह ज्ञान का खजाना समाता है। सम्पूर्ण ईश्वरीय खजाने हमारी पवित्र बुद्धि में ही ठहरती है। यदि बुद्धि का वर्तन स्वच्छ नहीं है तो हम कुछ भी अनुभव नहीं कर पाते है।

तो ज़रा चेक कर ले ध्यान से। हमने अपने बुद्धि को स्वच्छ किया है? तब इसमें हम सर्व खजाने भर सकेंगे। खुशी का खजाना, शान्ति का खजाना, प्रेम का खजाना, दुआओं का खजाना, शुभ भावनाओं का खजाना ... यह सब हमारे बहुत सुन्दर खजाने है।

और साथ साथ एक और बहुत अच्छा खजाना है। महान विचारों का खजाना। जो हमारे बहुत बड़ी सम्पत्ति है, संतुष्टता का खजाना। यह सब हमें अपने अंदर समाने है।

तो बुद्धि को स्वच्छ करके, अपने वर्तन को योगयुक्त होकर पावरफूल बनाये। ताकि सारे खजाने उसमें ठहर सके। कभी यह भी हो सकता है, खजाने उसमें आये, लेकिन बहुत जल्दी बहकर समाप्त हो गये।

खुशी आई, पर बहुत जल्दी कहीं न कहीं समाप्त हो गई। तो हमें बुद्धि की सफाई का अभियान भी प्रारंभ करना है। खजानों से भरपूर करे अपने बुद्धि को। और योगयुक्त होकर इस बुद्धि रूपी वर्तन को बहुत डिवाइन बनाये।

और हम सभी जानते है योगी सभी नहीं बन पाते है। क्योंकि योग का मार्ग ऐसा है उसमें लगातार मनुष्य को गाइडेंस की जरूरत पड़ती है। बहुत सारी बाॅधाये योग के मार्ग पर आती रहती है।

अगर उनको हम दूर करना नहीं सीखेंगे, तो योग का मार्ग रूक जाता है। कई सारे व्यर्थ संकल्प, कभी अकेलापन, कभी योग के प्रति भी अरूचि, कभी सवेरे उठने के प्रति अरूचि ... यह सभी योग के मार्ग पर आने वाले विभिन्न बांधायें है।

इसलिए रोज गाइडलाइन लेते रहे। और अपने को एक ऐसे सुन्दर मार्ग पर चलाये के हम सदा के योगी बन जाये। हम योगयुक्त बन जाये।

तो आज सारा दिन बहुत सुन्दर अभ्यास करेंगे, बाबा को देखेंगे ऊपर ...

" पवित्रता का सागर "

और मैं हूँ ...

" पवित्रता का सूर्य "

दोनों जुड़ गए ..

" उनकी पवित्र किरणें मुझमें समाने लगी .. और मेरा तेज बढ़ने लगा .. यह पवित्र किरणें सारे संसार में फैलने लगी "

घन्टे में एकबार इसका अनुभव अवश्य करेंगे ...

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org	**Website**: www.shivbabas.org